June-2024

Roll No. ....

Total No. of Questions : 6] [Total No. of Printed Pages : 4

(2064)

M.A. (CBCS) Ist Semester Examination

8890

HINDI

(मध्यकालीन काव्य)

(Core)

Paper : MHIN-101

Time : 3 Hours] **[Maximum Marks : {Regular : 80, Private : 100**

नोट :- सभी प्रश्नों के निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

खण्ड–अ 7×4=28[9×4=36]

1. निम्नलिखित चारों खण्डों के विकल्प आधार पर सप्रसंग उत्तर दीजिए :

(i) पछा पछी के कारनै सब जग रहा भुलान।

निरपछ ह्वैके हरि भजै, सोई संत सुजान॥

अमृत केरि मोटरी, सिर से धरी उतार।

जाहिं कहौं मैं एक है, मोहि कहै दो–चार॥

अथवा

भीजै चुनरिया प्रेम-रस बूँदन।
आरत साज के चली है सुहागिन पिय अपने को ढूंढ़न।
काहे को तोरी बनी चुनरिया काहे को लगे चारों फूँदन।
पाँच तत्त्व की बनी चुनरिया नाम के लागे फूँदन।
चढ़िगे महल खुल गई रे किवरिया दास कबीर लागे झूलन॥

(ii) अपने सगुन गोपालै, माई! यहि बिधि काहे देत।
ऊधो की ये निरगुन बातें, मीठी कैसे लेत।
धर्म-अधर्म कामना सुनावत, सुख औ मुक्ति समेत।
काकी भूख गई मनलाडू सो देखहु चित चेत।
सूर स्याम तजि को भुस फटके मधुप तिहारे हेत॥

अथवा

आयो घोष बड़ो ब्योयारी।
लादि खेप गुन ज्ञान-जोग की ब्रज में आन उतारी।
फाटक दै कर हाटक माँगत भोरे निपट सुधारी।
धुर ही तें खोटो खायो है, लये फिरत सिर भारी।
इनके कहे कौन डहकावै ऐसी कौन अजानी।
अपनो दूध छाँड़ि को पीवै खार कूप को पानी।

(iii) नहिं अनीति नहिं कछु प्रभुताई। सुनउँ करहु जो तुम्हहि सोहाई।
सोइ सेवक प्रियतम मम सोई। मम अनुसासन मानै जोई।
जौ अनीति कछु भाषौं भाई। तौ मोहिं बरजहु भय बिसराई।
बड़े भाग मानुष तन पावा। सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा।

अथवा

परहित सरिस धर्म नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।
निर्नय सकल पुरान बेद कर। कहेउँ तात जानहिं कोबिद नर।
नर सरीर धरि जे पर पीरा। करहिं ते सहहिं महा भव भीरा।
करहिं मोह बस नर अघ नाना। स्वारथ रत परलोक नसाना।

(iv) कुहुकि कुहुकि जसि कोइलि रोई। रकत आँसु घुँघची बन बोई।
यै करमुखी नैन तन राती। कौ सिराव बिरहा दुख ताती।
जहँ-जहँ ठाढ़ि होइ बनबासी। तहँ-तहँ होइ घुँघुचिन्ह कै रासी।
बूँद-बूँद महँ जानहु जीऊ। कुंजा गुंजि करहिं पिउ-पिउ॥

अथवा

दादुर मोर कोकिला पीऊ। करहिं बेझ घट रहै न जीऊ।
पुख नछत्र सिर ऊपर आवा। हौं बिनु नाँह मंदिर को छावा।
जिन्ह घर कंता ते सुखी, तिन्ह गारौ तिन्ह गर्ब।
कंत पियारा बाहिरें हम सुख भूला सर्व॥

खण्ड–ब

नोट :- निम्नलिखित चारों आलोचनात्मक प्रश्नों के विकल्प आधार पर उत्तर दीजिए।

2. कबीर के समाज-सुधार की भावना का विवेचन कीजिए।

अथवा

कबीर की भाषा का सोदाहरण विवेचन कीजिए। 10[13]

3. 'भ्रमरगीत' का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'भ्रमरगीत' की गोपियों की वाक्पटुता का परिचय दीजिए। 10[13]

4. ''उत्तरकांड में मानव-जीवन-पथ को आलोकित किया गया है।'' कथन की समीक्षा कीजिए।

अथवा

उत्तरकांड के आधार पर श्रीराम के आदर्श चरित्र की विवेचना कीजिए। 10[13]

5. जायसीकृत 'पद्मावत' के महाकाव्यत्व की समीक्षा कीजिए।

अथवा

पद्मावत में नागमती के वियोग चित्रण में 'बारहमासा' की विवेचना कीजिए। 10[13]

खण्ड-स [2×6=12]

6. निम्नलिखित लघुउत्तरीय प्रश्नों में से किन्हीं छह के उत्तर दीजिए :

(i) "कबीर निर्भीक, निडर, निर्गुण कवि थे।" कथन की समीक्षा कीजिए।

(ii) कबीर के जीवन के उल्लेखनीय संदर्भ का परिचय दीजिए।

(iii) 'भ्रमरगीत' नामकरण की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

(iv) भ्रमरगीत की भक्ति भावना का विवेचन कीजिए।

(v) रामचरितमानस के कांडों के नामकरण-संदर्भ का परिचय दीजिए।

(vi) उत्तरकांड के विभिन्न पात्रों का श्रीराम के साथ हुए संवाद की विवेचना कीजिए।

(vii) पद्मावत के मानसरोदक खण्ड की विशेषता लिखिए।

(viii) पद्मावत के 'नागमती वियोग खण्ड' के आधार पर नागमती के वियोगी रूप का परिचय दीजिए।

Roll No. ....

Total No. of Questions : 5] [Total No. of Printed Pages : 3

(2064)

M.A. (CBCS) Ist Semester Examination

8891

HINDI

[हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदि, भक्ति एवं रीतिकाल)]

(Core)

Paper : MHIN-102

Time : 3 Hours] **[Maximum Marks : { Regular : 80, Private : 100**

नोट :- कुल **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक खण्ड से **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए।

खण्ड–क

1. हिन्दी साहित्य के इतिहास में काल-विभाजन एवं नामकरण की समस्या पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'इतिहास-दर्शन और साहित्येतिहास' विषय पर निबन्ध लिखिए।

खण्ड–ख

2. रासो काव्य परम्परा का परिचय देते हुए उसमें पृथ्वीराज रासो का स्थान निर्धारित कीजिए।

अथवा

आदिकालीन हिन्दी साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

खण्ड–ग

3. संत काव्य धारा की प्रमुख विशेषताओं का उद्घाटन कीजिए।

अथवा

"तुलसी रामभक्ति शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

खण्ड–घ

4. रीतिकालीन साहित्य की विभिन्न धाराओं का परिचय दीजिए।

अथवा

रीतिमुक्त काव्य की विशेषताओं पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

15×4=60[20×4=80]

अति लघूत्तरीय प्रश्न

5. किन्हीं **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(i) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की साहित्येतिहास विषयक अवधारणा पर प्रकाश डालिए।

(ii) ग्रियर्सन के हिन्दी साहित्येतिहास ग्रंथ की विशेषताएँ बताइए।

(iii) हिन्दी साहित्य का पुनर्लेखन क्यों आवश्यक है ? बताइए।

(iv) विद्यापति की किन्हीं दो रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

(v) नाथ सम्प्रदाय की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

(vi) अमीर खुसरो पर संक्षिप्त परिचयात्मक टिप्पणी लिखिए।

(vii) भक्तिकाल की सांस्कृतिक चेतना पर प्रकाश डालिए।

(viii) कबीरदास की भाषा के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

(ix) कृष्ण भक्ति के विविध सम्प्रदायों का उल्लेख कीजिए।

(x) रीतिसिद्ध कवि किन्हें कहा गया है ? स्पष्ट कीजिए।

(xi) "घनानन्द रीतिमुक्त काव्य धारा के श्रेष्ठ कवि हैं।" इस कथन की विवेचना कीजिए।

(xii) केशव के आचार्यत्व पर टिप्पणी लिखिए। [10×2=20]

Roll No. ....

Total No. of Questions : 3] [Total No. of Printed Pages : 7

(2064)

M.A. (CBCS) Ist Semester Examination

8892

HINDI

(हिंदी नाटक एवं उपन्यास)

(Core)

Paper : MHIN–103

Time : 3 Hours] **[Maximum Marks : Regular : 80, Private : 100**

नोट :- सभी प्रश्नों के निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं **चार** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। प्रत्येक खण्ड में से **एक** की व्याख्या करना अनिवार्य है।

खण्ड–क

(i) समझदारी आने पर यौवन चला जाता है-जब तक माला गूंथी जाती है, तब तक फूल कुम्हला जाते हैं। जिससे मिलने के संभार की इतनी धूमधाम, सजावट, बनावट होती है, उसके आने तक, मनुष्य अपने हृदय को सुन्दर और उपयुक्त नहीं बनाये

रह सकता। मनुष्य की चंचल स्थिति तब तक श्यामल कोमल हृदय को मरुभूमि बना देती है। यही तो विषमता है।

(चंद्रगुप्त, पृ.-94)

अथवा

मगध के स्वतंत्र नागरिकों को बधाई है। आज आप लोगों के राष्ट्र का नवीन जन्म-दिवस है। स्मरण रखना होगा कि ईश्वर ने सब मनुष्यों को स्वतंत्र उत्पन्न किया है, परन्तु व्यक्तिगत स्वतंत्रता वहीं तक दी जा सकती है, जहां दूसरों की स्वतंत्रता में बाधा न पड़े। यही राष्ट्रीय नियमों का मूल है। वत्स चंद्रगुप्त! स्वेच्छाचारी शासन का परिणाम तुमने स्वयं देख लिया है, तब मंत्री-परिषद की सम्मति से मगध और आर्य्यावर्त के कल्याण में लगो।

(चंद्रगुप्त, पृ.-105)

खण्ड-ख

(ii) ज्ञात क्या तुम्हें है परिणाम इस ब्रह्मास्त्र का ?
यदि यह लक्ष्य सिद्ध हुआ ओ नरपशु !
तो आगे आने वाली सदियों तक
पृथ्वी पर रसमय वनस्पति नहीं होगी
शिशु होंगे पैदा विकलांग और कुष्ठग्रस्त
सारी मनुष्य जाति बौनी हो जायेगी

जो कुछ भी ज्ञान संचित किया है मनुष्य ने
सतयुग में, त्रेता में, द्वापर में
सदा-सदा के लिए होगा विलीन वह
गेहूं की बालों में सर्प फुफकारेंगे
नदियों में बह-बह कर आयेगी पिछली आग।

(अंधा युग, पृ.-73)

अथवा

यह अजब युद्ध है नहीं किसी की भी जय
दोनों पक्षों को खोना ही खोना है
अन्धों से शोभित था युग का सिंहासन
दोनों ही पक्षों में विवेक ही हारा
दोनों ही पक्षों में जीता अन्धापन
भय का अन्धापन, ममता का अन्धापन
अधिकारों का अन्धापन जीत गया
जो कुछ सुन्दर था, शुभ था, कोमलतम था
वह हार गया..........द्वापर युग बीत गया।

(अंधा युग, पृ.-11)

खण्ड-ग

(iii) होरी पहले तो इस प्रस्ताव पर हँसा, उस पर शान्त मन से विचार भी न करना चाहता था, लेकिन ठाकुर ने ऊँच-नीच सुझाया,

महाजनी के हथकण्डों का ऐसा भीषण रूप दिखाया कि उसके मन में भी यह बात बैठ गयी। ठाकुर ठीक ही तो कहते हैं, जब हाथ में रुपये आ जायें, गाय ले लेना। तीस रुपये का कागद लिखने पर कहीं पचास रुपये मिलेंगे और तीन-चार साल तक न दिये गये, तो पूरे सौ हो जायेंगे। पहले का अनुभव यही बता रहा था कि कर्ज वह मेहमान है, जो एक बार आकर जाने का नाम नहीं लेता।

(गोदान, पृ.-106)

अथवा

गोबर ने माँ-बाप के चरण छुए और रूपा को गोद में उठाकर प्यार किया। धनिया ने उसे आशीर्वाद दिया और उसका सिर अपनी छाती से लगाकर मानो अपने मातृत्व का पुरस्कार पा गयी। उसका हृदय गर्व से उमड़ा पड़ता था। आज तो वह रानी है। इस फटे-हाल में भी रानी है। कोई उसकी आँखें देखे, उसका मुख देखे, उसका हृदय देखे, उसकी चाल देखे। रानी भी जायेगी। गोबर कितना बड़ा हो गया है और पहन-ओढ़कर कैसा भलामानस लगता है। धनिया के मन में कभी अमंगल की शंका न हुई थी। उसका मन कहता था, गोबर कुशल से है और प्रसन्न है। आज उसे आँखों से देखकर मानो उसके जीवन के धूल-धक्कड़ में गुम हुआ रत्न मिल गया है, मगर होरी ने मुँह फेर लिया था।

(गोदान, पृ.-211)

खण्ड–घ

(iv) जोतखी काका आजकल बहुत चुप रहते हैं। फिर भी इतनी बड़ी-बड़ी घटनाओं पर वह कुछ नहीं बोलें, यह कैसे हो सकता है। उनकी राय है कि यह सब सिर्फ सुराज का नतीजा है। .... जिस बालक के जन्म लेते ही माँ को पक्षाघात हो गया और दूसरे दिन घर में आग लग गई, वह आगे चलकर और क्या-क्या करेगा, देख लेना। कलियुग तो अब समाप्ति पर है। ऐसे-ऐसे ही लड़-झगड़कर सब शेष हो जाएँगे।

(मैला आँचल, पृ.-263)

अथवा

डॉक्टर पर यहाँ की मिट्टी का मोह सवार हो गया। उसे लगता है, मानो वह युग-युग से इस धरती को पहचानता है। यह अपनी मिट्टी है। नदी-तालाब, पेड़-पौधे, जंगल-मैदान, जीव-जानवर, कीड़े-मकोड़े, सभी में वह एक विशेषता देखता है। बनारस और पटना में भी गुलमुहर की डालियाँ लाल फूलों से लद जाती थीं। नेपाल की तराई में पहाड़ियों पर पलास और अमलतास को भी गले मिलकर फूलते देखा है, लेकिन इन फूलों के रंगों ने उस पर पहली बार जादू डाला है।

(मैला आँचल, पृ.-197)

7×4=28[9×4=36]

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **चार** आलोचनात्मक प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक खण्ड में से एक प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य है।

खण्ड–क

(i) समकालीन संदर्भ में चंद्रगुप्त नाटक की प्रासंगिकता को व्याख्यायित कीजिए।

अथवा

सांस्कृतिक पुनरुत्थान को केन्द्र में रखकर चंद्रगुप्त नाटक की समीक्षा कीजिए।

खण्ड–ख

(ii) "'अंधा युग' अंधेरे के माध्यम से उजाले की कहानी है।" अंधा युग को केन्द्र में रखकर इस कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

अथवा

'अंधा युग' की रंगमंचीयता की विस्तार से चर्चा कीजिए।

खण्ड–ग

(iii) 'गोदान' एक यर्थाथवादी उपन्यास है। प्रमाणित कीजिए।

अथवा

गोबर का चरित्र-चित्रण कीजिए।

खण्ड–घ

(iv) स्वतंत्रता-प्राप्ति के परिप्रेक्ष्य में 'मैला आँचल' की समीक्षा कीजिए।

अथवा

'मैला आँचल' एक आँचलिक उपन्यास है। इस संदर्भ में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

10×4=40[13×4=52]

3. चारों खण्डों में से निर्धारित निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं छः अति लघुत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) जयशंकर प्रसाद के विभिन्न नाटकों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(ख) चंद्रगुप्त नाटक के चंद्रगुप्त का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(ग) 'अंधा युग' की रंगमंचीयता में आने वाले संकट की संक्षेप में चर्चा कीजिए।

(घ) 'आस्था तुम लेते हो/लेगा अनास्था कौन ?'
'अंधा युग' की इस पंक्ति की समीक्षा कीजिए।

(ङ) 'गोदान' शीर्षक की सार्थकता को स्पष्ट कीजिए।

(च) होरी के चरित्र का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(छ) 'मैला आँचल' शीर्षक की सार्थकता को स्पष्ट कीजिए।

(ज) फणीश्वरनाथ रेणु का संक्षिप्त लेखकीय परिचय दीजिए।

2×6=12[2×6=12]

Roll No. ....

Total No. of Questions : 5] [Total No. of Printed Pages : 3

(2064)

M.A. (CBCS) Ist Semester Examination

8893

HINDI

(भाषा-विज्ञान)

(Core)

Paper : MHIN-104

Time : 3 Hours] **[Maximum Marks : Regular : 80, Private : 100**

नोट :- सभी प्रश्नों के निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

(खण्ड–क)

नोट :- सभी **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. भाषा की परिभाषा देते हुए भाषा-संरचना का परिचय दीजिए।

अथवा

भाषा-व्यवस्था और भाषा-व्यवहार का सोदाहरण विवेचन कीजिए।

2. स्वन को परिभाषित करते हुए स्वरों का वर्गीकरण कीजिए।

अथवा

स्वनगुण की अवधारणा स्पष्ट करते हुए उसके स्वरूप का विवेचन कीजिए।

3. रूप प्रक्रिया का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उनकी शाखाओं का परिचय दीजिए।

अथवा

सम्बन्धदर्शी रूपिमों के भेद और प्रकार्य स्पष्ट कीजिए।

4. वांक्य की गहन और बाह्य संरचना स्पष्ट कीजिए।

अथवा

शब्द और अर्थ-सम्बन्ध का सोदाहरण परिचय दीजिए।

(4×15=60)[4×20=80]

(खण्ड–ख)

5. निम्नलिखित में से किन्हीं 10 (दस) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

   (i) वाक् (पेरोल) की परिभाषा दीजिए।

   (ii) "भाषा सामाजिक संपत्ति है" स्पष्ट कीजिए।

   (iii) "भाषा सतत् परिवर्तनशील है", कथन पर अपना मंतव्य लिखिए।

   (iv) तुलनात्मक भाषा-अध्ययन का परिचय दीजिए।

   (v) हिन्दी के मूर्द्धन्य स्वनों का विवरण लिखिए।

   (vi) अंतस्थ स्वनों का विवरण लिखिए।

   (vii) अर्थदर्शी रूपिम का परिचय दीजिए।

   (viii) आबद्ध रूपिम की सोदाहरण परिभाषा लिखिए।

(ix) स्वास्थ्य शब्द के किस स्वन पर बलाघात है ?

(x) अर्थ की परिभाषा लिखिए।

(xi) 'पंडा' शब्द के अर्थ-परिवर्तन की कौनसी दिशा है ?

(xii) साहस शब्द में कौनसा अर्थ-परिवर्तन हुआ है ? [10×2=20]